

यत्र तत्र स्थित काश्मीरी पण्डित जाति

की



सेवा में



उपहार नं (१)

श्री गौरी स्तुति

(हिन्दी अन्वयार्थ भावार्थ और काश्मीरी अनुवाद सहित)

'दुर्गाप्रेस, श्रीनगर में मुद्रित होकर प्रथम बार आषाढ मास

२००६ (विक्रमी)

में

प्रकाशित हुई

अनुवादक — शुभचिन्तक

(जानकी नाथ बख्शी)।।

[मूल्य ४ आने ६ पाई]



नमो गौर्य्यै !

लीलारब्ध - स्थापित - लुप्ताखिललोकां
लोकातीतैर् योगिभिर् अंतर्-हृदि मृग्याम्।
बालादित्य - श्रेणि - समान - द्युति - पुंजां
गौरीं अंबां अंबुरुहाक्षी अहं ईडे ॥१॥

लीला लीला से **आरब्ध** उत्पन्न किया है **स्थापित** रक्षा की है **लुप्त** नाश किया हैं **अखिल लोकां** सब लोक को, सब जगत को, जिसने उसको ;

लोक अतीतैः (लोकों से अतीत हुए हैं) लोकोत्तर दृष्टिवाले **योगिभिः** योगियों से **अन्तर्हृदि** हृदय के बीच **मृग्याम्** ढूंढी जाती है जो उस को ;

बाल छोटे अर्थात् प्रभातके, **आदित्य** सूर्य के **श्रेणि** समूह के **समान** तुल्य **द्युति** ज्योती की **पुंजां** राशी जो है उस को ;

अंबुरुह - अक्षीम् कमल के से नेत्र हैं जिस के उसका **अहं ईडे** मैं स्तुति, नमस्कार करता हूं ।

मैं उस कमल से नेत्रों वाली जगदम्बा पार्वती जी को प्रणाम और स्तुति करता हूं जो

लीला से अनायास ही भूः भुवः स्वः आदि लोकों को उत्पन्न करती है रक्षा करती है और अपने समय पर लय भी करती है और जिसको लोकोत्तर दृष्टिवाले योगी अपने हृदयों में ही खोज निकालने का यत्न करते हैं और जिसका तेज अनंत प्रभात सूर्यों के अति-मनोहर प्रकाश के समान है।

लीलायि किन्य यस लोक उपदांवित
ललवित सांरी लय करान
लोकन धंद्य गांमंत्य योगीज़न
यिम यस हृदयस मंज़ छारान
बालु सूर्यन हंज़न तंदलन सम
यस ज्योतीहंद्य लांच आसान
पंपोष फ़ुलिमंत्य ज़न नेत्र यस
तस माजि गौरी छुस नमान

———:O:———

आशा - पाश - क्लेश - विनाशं विदधानां
पादाम्भोज - ध्यान पराणां पुरुषाणां।
ईशीं ईशार्धांगहरां तां तनुमध्यां गौ० ॥२॥

पाद अंभोज चरण कमलों के ध्यान पराणां पुरु-षाणाम् ध्यान पर लगे हुए पुरुषों के आशापाश

क्लेश विनाशं आशा की फांसी के क्लेश वा कष्ट का नाश
विदधानाम् करने वाली जो है उस को ; **ईशीम्**
सब सामर्थ्यों वाली ईश्वरी को **ईश अर्ध अङ्ग हरां**
ईश्वर के अर्ध शरीर को लेने वाली जो है उस को [जो ईश्वर
के साथ एकसात् वा समान हैं] **तां तनुमध्याम्**
उस पतली कमर वाली को [पतली कमर वाली से प्रयोजन
मध्य नाडी वा चित् शक्ति है जो अन्दर से हर एक शरीर
में और बाहिर से सब जगत के मध्य में रहती है]

चरन कमलों के ध्यान पर लगे हुए पुरुषों की नाना प्रकार आशाओं की फांसी के कष्ट को मिटाने वाली और सब सामर्थ्यों वाली ईश्वरी जो परमेश्वर की अर्धाङ्गिणी है और जो प्रति जीव की मध्य नाडी में परम सूक्ष्म रूप से तथा बाह्य से सारे विश्व में अणीयान रूप से विराजमान है उस जगत माता को मैं प्रणाम करता हूं

पंपोषि पादन हंदिस ध्यानस
लंग्यमंत्य ग्यिम रंत्य ज़न आसान
तीहंन्यन आशापाशन हंन्यन
क्लेशन हुंद यस खुर कासान
[आशा तृष्णा दुःख दांव अनिबंध्य
खुर्य नाव साम्रय छक कासान]

जांघुल मध्य यस राजश्रनि माजि सानि
स्वामियस अर्धभाग यसु आसान
[सूत्सु खुत सूक्ष्म मध्यधामशक्ति
यसु ईश्वरस सम आसान] प०

——:O:——

प्रत्याहार - ध्यान - समाधि - स्थिति - भाजां
नित्यं चित्ते निर्वृति - काष्टां कलयन्तीम् ।
सत्यज्ञानानंदमयीं तां तडित् आभां गौ० ॥३॥

प्रत्याहार इंद्रियों को विषयों से हटा कर लाना ध्यान मन को एकाग्र करना समाधि माता के चरणों में मग्न होना स्थिति — इन नियमों के भाजाम् सेवन करने वालों को नित्यं सदा चित्ते मन में निर्वृति काष्टाम् मोक्ष सुख की परादशा को कलयन्तीम् बनाने वाली जो है उस को ;

सत्य - ज्ञान - आनंद - मयीं सत् चित् आनंद स्वरूप जो है उस को ;

तडित् आभाम् बिजली की सी शोभा जिस की है तां उस को ,

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, आदि अष्टाङ्ग योग के नियमों के पालन करने वाले सज्जनों

के आशा तृष्णा आदि दुःखों को मिटाने वाली और उन के चित्तों में समाधि सुख की परा काष्टा को उत्पन्न करने वाली सच्चिदानंद स्वरूप और बिजली की सी शोभा रखने वाली जगन्माता गौरी को मैं प्रणाम करता हूं।

इंद्रिय जीतित, ध्यान धारित गिम
मन लय करनस पर आसान
तिहुंध्यन चित्तन मंज़ यसु हर्षिव हर्षिव
काष्टा नित छे उपदावान
सत-चित-आनंदमय उज़मल ज़न
[केवल योगी यस प्रावान] पं०

———:O:———

चंद्रापीडानंदित - मन्द - स्मित - वक्त्रां
चंद्रापीडालङ्कृत - लोलालक - भारां
इंद्रोपेंद्राभ्यर्चित - पादाम्बुज - युग्मां गौ० ॥४॥

चंद्र-आपीड चंद्रमा शिरोभूषण वाले शिवजी महाराज को
आनंदित हर्ष देने वाला मंद-स्मित-वक्त्रां
ज़रा सी हंसी वाला मुख जिस का है उस को [अथवा शिवजी महाराज के आनंदित होने से मंद मुसकान से शोभित मुख है जिस का उसको]
चंद्र आपीड शिरो भूषण चंद्रमा से अलङ्कृत शोभित

लोल, अलक, मारां चंचल केश पाश हैं जिसके अथवा घोंगर वाल बाल हैं जिस के उस को ;
इंद्र उपेंद्र इंद्र और विष्णु भगवान से अभ्यर्चित पूजा किये हुए पाद अम्बुज युग्मां पाद कमलों की जोडी है जिस की उस को ;

अपने स्वामि वा स्वात्मदेव से प्रहर्षित होकर मंद मुसकान से शोभित मुखवाली अथवा अपने स्वामि शिवजी महाराज को ही अपनी सहचर्या से प्रफुल्लित पाकर आप भी अतिहर्ष से विकसित मुखवाली और माया के जटिल पाशों से सुशोभित शिर वाली जगन्माता श्री गौरी जी के चरण कमलों की पूजा अति उत्साह के साथ इंद्र और विष्णु भगवान जैसे उच्च पदवी के देव भी करते हैं उसी माता के चरणों को मैं प्रणाम करता हूं

शिवजी यस उछित हर्षस गोमुत
[शिवजीयस उचिछत हर्षस गांमुच]
मोनय असुवनि मुख आसान
शेरकि भूषण चंद्रमु किन्य यस
चंचल केश पाश शोभायमान
[कांकनि मस छुम शोभायमान]
यस मियि चरणारविन्दन हुंदि जोरि
पूज़ान इंदर तु श्रीनारान पं०

नानाकारैः शक्ति-कदम्बैर् भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयम् एव *
कल्याणीं तां कल्पलताम् आनति-भाजां गौ० ॥५॥

नाना आकारैः शक्ति कदम्बैः नाना आकारों वाली शक्तियों के समूहों से या असौ जो वह भुवनानि सब भुवनों को व्याप्य व्याप्त करके स्वैरं स्वतन्त्रता से, अपनी इच्छा से स्वयं एव आप ही क्रीडति खेलती है; कल्याणीं मङ्गल के स्वरूप वाली, जगत को सुख देने वाली जो है उस को;
आनति भाजाम् नम्रता से सेवा करने वालों को कल्पलतां सब मनोरथों को सिद्ध करने वाली कल्प वृक्ष की बेल जैसी जो है ताम् उस को;

जो भगवती नाना रूप वाली अनंत शक्तियों से चतुर्दश भुवन को ओत प्रोत व्याप्त करके स्वेच्छा से आपही किसी की सहायता के विना [अथवा आप एक जैसी रहकर] सृष्टि स्थिति और संहार का खेल रचती है, और जो भक्तजन नम्र होकर उस की पूजा करते हैं, उन को योग क्षेम रूप सब मनोरथों को सिद्ध करती है, उसी माता गौरी को मैं प्रणाम करता हूं

---

* पाठांतर 'एका' है अर्थ इस का 'एक ही'

अांतु रछ़ु शक्तीयन हुंद नाना
रूपु यसु व्यापित अन ज़गुतन
पतुनी इच्छ़ायि पानय खेलान
यसु अन भुवनन सुंख दीवान
चडि आचेंर् किन्यू ग्रिम छिस पूज़ान
कल्प थेर कामनायि छक पूरान पं०

———:O:———

मूलाधारात् उत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्
ध्येयां सूक्ष्मां सूक्ष्मतनुं तां तडित् आभां गौ० ॥६॥

मूलाधारात् मूलाधार से **उत्थितवंतीं** उठी हुई **सौरं चान्द्रं धाम विहाय** सूर्य और चंद्रमा का प्रकाश छोडकर **विधि रंध्रम्** ब्रह्मरंध्र, सहस्रार को पहुंची हुई **ज्वलित अङ्गीम्** प्रकाशमान स्वरूप जिस का है **ध्येयां** जो ध्यान के योग्य है **सूक्ष्मां** जो सूक्ष्म है; **सूक्ष्म] तनुं** जो सूक्ष्म शरीर वाली वा अति सूक्ष्म स्वरूप वाली है **तडित् आभां** बिजली की सी शोभा है जिस की **तां** उस को ०

मूलाधार से उठ कर जो कुण्डलिनी शक्ति

इडा, पिङ्गला, नाडियों अथवा प्राण और अपान रूप सूर्य और चंद्रमा के प्रकाशों को उल्लङ्घन करके ब्रह्मरंध्र अर्थात् सहस्रार में जगमगाती है, जो सूक्ष्म अति सूक्ष्म स्वरूप वाली बिजली की भांति है, और जिस को योगी ध्यान से प्राप्त कर सकते हैं, उस माता गौरी की मैं वंदना करता हूं।

मूलाधार् पद्य ठु नीरित्त यस् नित
ब्रह्म रंध्रस मंज़ गाह आवान
सूर्य चंद्रस संज़ ज्योती ज़ाविथ
यस् पनने गाश् नित चमकान
ज़ाविज़्य वारा ज़ाविज्य शक्ती
वुज़मल ज़न यसु नित प्रजलान
स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्म खुत सूक्ष्म
यस् प्रणामस युग्य आभान पं०

———:O:———

आदिक्षान्ताम् अक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूत - कदम्बं प्रसवित्रीम्
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तां प्रणवाख्यां गौ० ॥७॥

आदि 'अ' से लेकर **क्ष अन्ताम्** 'क्ष' तक अर्थात् 'ह' जो 'क्ष' से पहिले है उस को लेकर अहम् स्वरूप वाली **अक्षर मूर्त्या** अक्षरों के रूप से **विलसन्तीं** चमकने वाली को; **भूते भूते** सब महा भूतों अथवा हर एक प्राण--धारी में **भूत कदम्ब** जीवों के समूहों को **प्रसवित्रीम्** उत्पन्न करती है जो; **शब्द ब्रह्म** वेदों के **आनन्द मयीम्** आनंद के स्वरूप वाली जो है **प्रणव आख्याम्** प्रणव, ओंकार जिसका प्रशस्त नाम है उस को;

जो सरस्वती स्वर व्यंजनमय वर्णमाला के रूप से विकसित हुई है, जो आकाश, वायु आदि पंच महाभूतों में नाना प्रकार के स्थावर जङ्गम रूप सृष्टि को उत्पन्न करती है, और जो सब विद्याओं, भांति भांति की बोलियों, और शब्दों के आनंदमय स्वरूप वाली है और जिस का वाचक ओंकार है, उसी माता गौरी को मैं प्रणाम करता हूं

'अ' प्यठ 'ह' हस व्यथ यिम अछर
तिहुंदी रूप यसु नित उल्लसान
प्रथ कुनि भूतस आंश्रित यसु मांज्य
ज़ीवन हुंद्य ग्वल्य उपदावान
शब्द ब्रह्म आनंद मय सुय माता

* ओंकार परम्य सुंद नाव आसान

———:O:———

यस्याः कुक्षौ लीनम् अखण्डं जगत् अण्डं
भूयो भूयः प्रादुर् अभूत् अक्षतम् एव
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौ० ॥८॥

यस्याः जिस के **कुक्षौ** उदर में **लीनम्** लीन हुआ वा छुपा हुआ **अखण्डम्** सारे का सारा **जगत् अण्डम्** ब्रह्माण्ड **भूयो भूयः** बार बार **अक्षतम् एव** न टूटा हुआ ही, संपूर्ण ही **प्रादुर् अभूत्** प्रकट हुआ **स्फटिक अद्रौ** स्फटिक अद्रि पर. अर्थात् स्फटिक विशेष के सूर्य कांत रत्नों के पहाड कैलास पर [.परमार्थ ब्रह्म रंध्र ले हैं] **भर्त्रा सार्धं** भर्ता के साथ २, वा भर्ता का अर्ध भाग होकर **विहरन्तीं तां** विहार वा लीला करने वाली उस को

कल्पांत समय जिस के भीतर अखण्ड ब्रह्माण्ड बारं बार बीज रूप से लीन होकर कल्पों

---

* पाठान्तर 'अभिरामां' है जिस का अर्थ 'जो बहुत सुन्दर स्वरूप वाली है उस को'; काश्मीरी अनुवाद इस का :-

यम् सर्व सुंदर छ आसान पं०

इ[illegible]आदि में पुनः पुनः ज्यों का त्यों प्रकट होते हैं और जो अपने स्वामि महादेव के साथ साथ रहकर वा अभिन्न होकर कैलास पर अथवा प्रति जीव के सहस्रार में विलास करती है उसी माता गौरी के चरण कमलों में प्रणाम करता हूं

यसँदिस उंदरस मंज़ लीन गॉमॅत्य
अखंड ब्रह्माण्ड रोज़ान छि
भियि २ तिमय प्रकट बनित
पुरण भावस प्रावाण छि
भर्ता स्यथ यसु कैलासस प्यठ
असान विसान फेरान छे पं०

——:O:——

[illegible] यस्याम् एतत् प्रोतम् अशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्वत् क्वापि चरं क्वाप्यचरं च
तां अध्यात्म- ज्ञान-पदव्यागमनीयां गौ० ॥६॥

यद्वत जिस तरह सूत्रे तागे में मणिमाला रत्नों की माला [पिरोई गई हो उसी प्रकार] यस्याम् जिस में एतत् यह अशेषं सारे का सारा क्वापि कहीं चरम् चलने वाले, जङ्गम क्वापि कहीं

अचरम् च — न हिलने वाले, स्थावर रूप से भी — प्रोत
पिरोया गया है; अध्यात्म ज्ञान — आत्म ज्ञान या ब्रह्म ज्ञान की
पदव्या — पदवी, स्थिति से — गमनीयाम्
प्राप्त हो सकती है जो — ताम् — उस को;

जिस माता में यह सारा स्थावर जङ्गम रूप जगत् तागे में पिरोई हुई मणिमाला जैसा स्थित है और जिसका साक्षात्कार सामान्यतः आत्म ज्ञान द्वारा ही हो सकता है उसी माता गौरी के चरणों में प्रणाम करता हूं

यस मंज़ कुनि चर कुनि थावरु रूप
सोरुय यूत उरनु आसुत छु
यिथु पांछ्य सूत्रस मंज रतन हुंज
माला शोभा धारान छ
ब्रह्मु ज्ञानु पदवी किन्यू प्रावनी यसु
[भक्तन लोलु किन्यू धारान छे] पं०

———:O:———

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगत् ईशः
साक्षी यस्याः सर्ग-विधौ संहरणे च
विश्वत्राण-क्रीडन-शीलां शिव-पत्नीं गौ० ॥१०॥

या: जिस भगवती की **सर्ग विधौ** सृष्टि रचने की विधि पर **संहरणे** संहार करने की क्रिया पर **च** भी **नित्य:** सदा, अटल **सत्य:** सत्य स्वरूप **निष्कल** सब कलनाओं से रहित, निर-अवयव ब्रह्म **एक:** एक, केवल, अद्वितीय **जगत् ईश:** जगत् का ईश्वर, शंभु महाराज **साक्षी** देखने वाला; है **विश्व त्रान** जगत की रक्षा के **क्रीडन** खेल करने के **शीलाम्** स्वभाव वाली जो है उस को; **शिव पत्नीम्** शिवजी महाराज की जो अर्धाङ्गिनी है उस को०

सत्य स्वरूप नित्यस्थाई अद्वितीय निरवयव परं ब्रह्म जिस अपनी शक्ति की सृष्टि, स्थिति, संहार आदि लीला का साक्षी है और चतुर्दश भुवन की तात्विक रक्षा ही जिस की लीला का प्रयोजन है उस माता गौरी के चरणों में हार्दिक प्रणाम करता हूं

सृष्ट थ्यत संहार यम्य सुंज़ लीला
सांक्षी रूज़ित उछान छु
नित्य सत्य कॅवल निष्कल ईश्वर
ती ती डीशित फ़ुल्लान छु
ज़गतस रछनॅचि लीलायि कॅवन्य
शंभ्रू सुंज़ यसु शक्ती छे पं०

———:O:———

प्रातः काले भावविशुद्धः प्रणिधानात्
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिं सम्पदम् उच्चैः शिवभक्तिं
तस्यावश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति गौ० ॥११॥

प्रातः काले प्रभात समय को यः जो भाव विशुद्धः शुद्ध अंतःकरण वाला प्रणिधानात् समाहित होकर, ध्यान देकर नित्यं हर एक दिन, सदा भक्त्या- भक्ति से गौरी दशकं गौरी माता की दस [श्लोकों वाली स्तुति] जल्पति बोलता जाता, है पाठ करता है पर्वत पुत्री पार्वती जी तस्य अवश्यं उस को अवश्य वाचां सिद्धिं वाक् सिद्धि संपदम् संपदा [और] उच्चै उत्तम शिवभक्तिं परमात्मा की भक्ति विदधाति दान करती है

जो शुद्ध अंतःकरण वाला भक्तजन समाहित होकर प्रति दिवस प्रभात समय को भक्ति से श्री गौरी माता की इन दस श्लोकों वाली स्तुति का पाठ करता है उस भाग्यवान को श्री पार्वती जी अवश्य वाक् सिद्धि संपदा और शिवजी महाराज की उत्तमोत्तम भक्ति देकर कृतार्थ करती है

प्रातः कालस ध्यान दिथ युस नित
शुद्ध मन पज़ि लोल परान छु
योग ज्ञान भक्तीम दोह यिम वाक
गौरी हुंज़ पसु तोता . छि
अवश्य तमिस ज़गतंच माता
सफल वांणी करान . छि
पडि बुड विभव भिथि शुम्भु सुंज
थदि थंज़ . भकती दिवान . छि १०

———:O:———

कश्मीरी भाषा के कुछ विशेष चिह्न

प्र॰ चिह्न	कशमीरी उदाहरण	अर्थ
.	च़म, छ़ट, ज़ंग,	चमड़ा, हवा, टांग
'	अंस्य, नंर, लंर,	हम, बाज़ू, मकान
ˇ	दुह, चु, अथु,	धुआं, तू हाथ
ˆ	नू़र, सू़त्य,	सर्दी, साथ
ˉ	वॆ॒द, सॆवा,	वेद, सेवा
ˆ	मै, चै,	मुझे, तुझे